राजपाल सिंह गुलिया

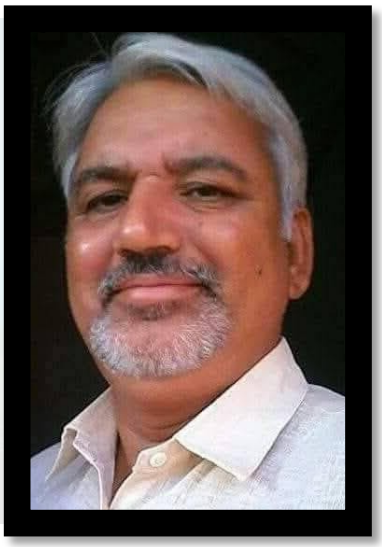

राजपाल सिंह गुलिया
जन्म : 27दिसम्बर 1964
शिक्षा : स्नातक , शिक्षण में डिप्लोमा .
संप्रति : सेना शिक्षा कोर में शिक्षा अनुदेशक (19 वर्ष) व हरियाणा शिक्षा विभाग में अध्यापक (17 वर्ष) पद से सेवानिवृत्ति के पश्चात अब स्वतंत्र लेखन

प्रकाशन : संग्रह

1. उठने लगे सवाल (दोहा संग्रह) 2. इतनी सी फ़रियाद (कुण्डलिया संग्रह) 3. निर्मल देश हमारा (बाल कविता संग्रह)
4. देगा कौन जवाब (दोहा संग्रह) 5. चन्दन वन (गीत - नवगीत संग्रह)

संकलन -27 समवेत संकलन
सम्पादन - सरस्वती सुमन के ' कुण्डलिया विशेषांक का अतिथि सम्पादन.
पुरस्कार : 1. शब्द गुंजन दोहा सम्मान 2018 2. निर्मला स्मृति हरियाणा गौरव सम्मान 2019 3. उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान
4. नवसृजन कला प्रवीण अवार्ड 5. निर्मला स्मृति हिन्दी साहित्य गौरव सम्मान 2021
6. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' स्मृति सम्मान 2021 7. कादम्बरी स्व० भगवती प्रसाद दुबे सम्मान 2022.
8. डॉ० स्वर्ण किरण शिखर बाल साहित्य सम्मान -2023.
9. श्री कँवल सिंह जाखड़ स्मृति साहित्य गौरव सम्मान - 2024 10. साहित्यकार सम्मान - 2024
11. प्रज्ञा श्रीमती नर्मदा देवी सतीश चन्द्र शर्मा ' महाकवि बोधा सिंह छंद श्री अलंकरण - 2024
12. श्रीमती संतरा देवी स्मृति ' महाकलमवीर सम्मान - 2025
13. डॉक्टर मनुमुक्त ' मानव ' दोहाश्री सम्मान - 2025.

विधाएं : दोहा , कुण्डलिया , ग़ज़ल , नवगीत , बालगीत व मुक्तक .
पता : गाँव - जाहिदपुर , डाकखाना - ऊँटलौधा
तहसील व जिला - झज्जर (हरियाणा)
पिन - 124108
संपर्क सूत्र : 9416272973
अणुडाक : rajpalgulia1964@gmail.com

बादल गरजे

गड़- गड़ करके बादल गरजे,
फिर बिजली चमकी चम-चम-चम.
छोड़ मेघ को आन धरा पर,
बूँद नाचती हैं छम - छम - छम.

टर्र - टर्र टर्राएं दादुर,
पीहू - पीहू अब मोर करें.
जाने कितने मच्छर मिलकर,
भिन - भिन करके सब शोर करें.

झर - झर कर झरते हैं झरने,
कल - कल करके नदियाँ बहती.
कुकू - कुकू करके कोयल भी,
मधुरिम सुर में क्या कुछ कहती.

दम - दम करके सब बच्चों ने,
खूब मेह में उधम मचाया.
मल - मल कर वो लगे नहाने,
दादा जी ने जब धमकाया

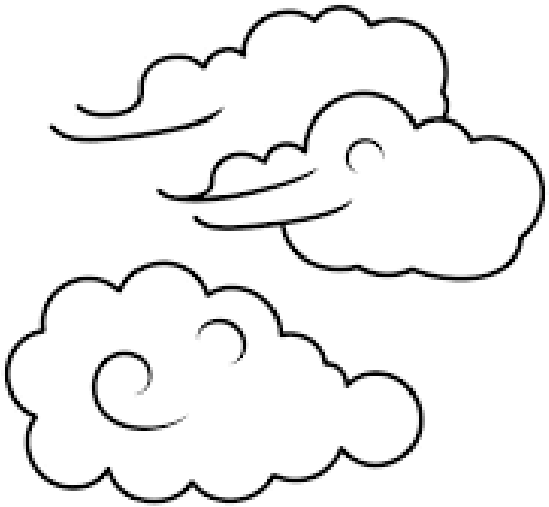

कम्प्यूटर जी

सुनो मेरे कम्प्यूटर जी ,
तुम हो मेरे ट्यूटर जी।

टीवी सा है तन तुम्हारा,
मोबाईल सा मन तुम्हारा,
पासवर्ड से ही तुम खुलते,
क्या कर लेगा चीटर जी।

नेटवर्क से जब जुड़ जाते ,
बिना पंख के तुम उड़ जाते ,
खोज खबर फिर सारे जग की,
दिखलाता मानीटर जी।

मनचाहा संगीत सुनाते,
फीड किए को भूल न पाते,
किस गति से तुम कहाँ चल रहे ,
दिखलाता हैं मीटर जी।

तुमको ले सभी करते जाप,
टेबलेट हो या लेपटॉप,
मदद करो तुम गुणा भाग में,
बनकर केलकुलेटर जी।

जंगल में मंगल

वनराज ने एक दिन वन में,
था जाँच शिविर लगवाया.
प्रथम सुख निरोगी काया कह,
सब जीवों को समझाया .

दिन चढ़ते ही जानवरों की,
बढ़ी हुई थी भीड़ वहाँ .
माँद पड़ी थी सब खाली औ',
रिक्त सभी थे नीड़ वहाँ.
कोई दौड़ा कोई रेंगा,
उड़कर था कोई आया.

कहा श्वान ने पूँछ हमारी,
टेढ़ी रहती क्यों बोलो?
हाथी पूछे वजन हमारा,
चलो आज फिर से तोलो.
एक माह से तिनका मैंने,
नहीं तनिक भी है खाया.

चमगादड़ ने पूछा हम क्यों,
उल्टे लटके रहते हैं.
आँख दिखा कर मगर पूछता
क्यों ये आँसू बहते हैं.
बन्दर बोला हमें आज तक,
अदरक में स्वाद न आया.

आगे बढ़ना

बेशक आएं विपद हजारों,
हरदम आगे बढ़ना .
बैठ गमों के साए में तुम,
सपन सुनहरे गढ़ना .

झंझा से ये पर्वत बच्चो,
तनिक न विचलित होते .
नाविक वह जो तूफानों में,
. नहीं धैर्य को खोते .

चलती रहती नदिया निशिदिन,
सागर को पा जाती .
जो लक्ष्य निर्धारित कर चलते,
हार न उन्हें सताती .

टिक-टिक करके बात घड़ी भी ,
घड़ी -घड़ी समझाती .
गुजर गई ये घड़ी आज वो,
नहीं लौट कर आती .

. पेड़ लगाएं

चलो सभी ये मुहिम चलाएं,
पेड़ लगाएं, पेड़ बचाएं;
एक बच्चा और एक पेड़',
चलो हरेरी धरा बनाएं.

गर्मी होती कितनी भीषण,
बढ़ता जाए नित्य प्रदूषण;
प्रगति नाम पर छीने जन ने,
धरती से इसके आभूषण.

प्राणवायु वृक्षों से पाते,
हम पर ये फल -फूल लुटाते;
गर्मी जब बढ़ जाती ज्यादा,
हाथ हिला ये मेघ बुलाते.

तनिक बैठकर आज विचारें,
सूनी बंजर धरा निहारें;
वृक्ष लगाकर चल इस भू के,
रूप- रंग को और सँवारें.

धूप गुनगुनी

मन को भाती धूप गुनगुनी,
ठंड भगाती धूप गुनगुनी.

कुहरे को भी चकमा देकर,
आ ही जाती धूप गुनगुनी.

नव ऊर्जा संचारित करके,
जोश जगाती धूप गुनगुनी.

दबे पाँव खिड़की से सबको,
आन जगाती धूप गुनगुनी.

रुनझुन रुनझुन गीत नया सा,
आन सुनाती धूप गुनगुनी.

बैठे सारे जाने कब से,
क्या बतियाती धूप गुनगुनी.

दुम दबा कर ठंड भागे जब,
आँगन आती धूप गुनगुनी.

शीतकाल में लगे यही बस,
है संघाती धूप गुनगुनी.

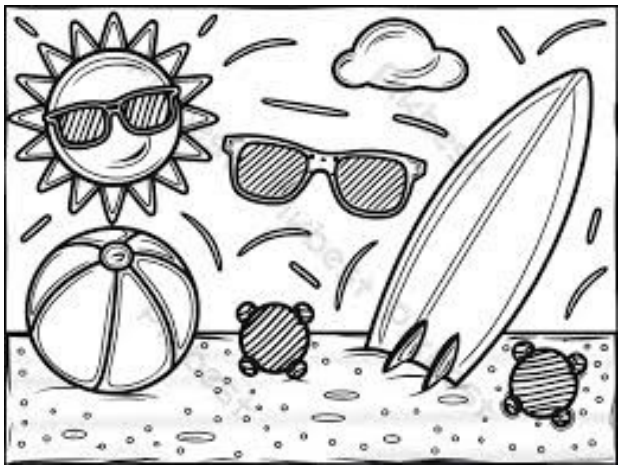

बस्ता

सोहन, मोहन आओ सारे,
. देखो मेरा थैला।
जेब कई हैं इसमें भैया,
रंग बहुत अलबेला।।

लाद पीठ पर रोज सवेरे,
जब मैं लेकर चलता।
क्यों ना ये खुद चलकर जाता,
यही मुझे है खलता।।

मुझको इससे इसको मुझसे,
मिली है इक पहचान।
हम दोनों की इक दूजे से,
हरदम बढ़ी है शान।।

हम दोनों हैं मित्र निराले,
कभी करें ना कुट्टी।
दोनों ही आराम करें हम,
हो जिस दिन भी छुट्टी।।

नादान कौआ

आओ बच्चो ! सुनो कहानी।
मुझे सुनाया करती नानी ।।

इक दिन चमगादड़ के द्वारे।
कव्वे जी थे आन पधारे।।

बोले, चच्चा मैं हूँ कौआ।
समझ रहे क्यों मुझको होआ।।

आसमान में देख अँधेरा।
दिल घबराता है अब मेरा।।

मिल जाए जो ठौर-ठिकाना।
भोर भए मुझको उड़ जाना।।

कष्ट उठा लो एक रात का।
मानूँगा एहसान बात का।।

चमगादड़ जी हँसकर बोले।
मनोभाव अपने यूँ खोले।

बाहर खड़े हो क्यों श्रीमान ।
देवरूप होता मेहमान ।।

घर के अंदर आओ प्यारे।
धन्य भाग जो आप पधारे।।

बेटा, यूँ ना दर दर भटको।
हम भी लटके तुम भी लटको।।

देखे उल्टे लटके सारे।
कौआ भागा डर के मारे।।

दादा जी

छड़ी उठाकर सुबह सवेरे,
निकल पड़े हैं दादा जी।

मौसम देखा बड़ा सुहाना,
छेड़ दिया है गीत पुराना,
हुआ अचानक ना जाने क्यों,
मौन खड़े हैं दादा जी।

दौड़ लगाते कभी लॉन में,
कभी बैठते किसी ध्यान में,
खुद ही खुद से मन के भीतर,
रोज लड़े हैं दादा जी।

हमें सुनाते रोज कहानी,
कभी नई तो कभी पुरानी,
किस्से गढ़ने में तो देखा,
कुशल बड़े हैं दादा जी।

बढ़कर कोई बोल बोलता,
सुनकर उनका खून खौलता,
भारत की आजादी खातिर,
खूब लड़े हैं दादा जी।

पानी

सुन लो बच्चो पानी कहता,
अपनी राम कहानी।

कभी गिरा मैं झरने से तो,
कभी नदी बन बहता,
कहीं बर्फ बन जम जाता तो,
कहीं उबलता रहता,
दाता ने किस्मत में कैसी,
लिख दी देख रवानी।

मुझसे भरते ताल तलैया,
मुझसे है हरियाली,
मेरे बिन प्यासे को देखो,
बनकर खड़ा सवाली,
पल में ठंडा किया अनल को,
जब भी भौंहें तानी।

छुप जाता हूँ कभी धरा में,
कभी मेघ में डेरा,
कभी भाप बन उड़ जाता हूँ,
ओस रूप भी मेरा,
छलक आँख से मैं जाता हूँ,
बनकर याद पुरानी।

मेरी आदत बड़ी निराली,
आगे बढ़ता जाता,
मीठा होकर भी मैं खारे,
सागर में मिल जाता,
निशदिन तुम भी बढ़ते जाना,
गर हो मंजिल पानी।

पंख हिला दो

पंख दिला दो चाचा जी अब,
छूटे ये भागा दौड़ी।

रंग-बिरंगे डैने ला दो,
देख-देख कर सब ललचाएँ,
मम्मी-पापा रहें खोजते,
दूर कहीं पर हम उड़ जाएँ,
पैसे दूँगा कभी बाद में,
आज नहीं फूटी कौड़ी।

दूर गगन में पास चाँद के,
जाकर पूछें मैं हाल जरा,
सूरज से भी जाकर कह दूँ,
धीमा करो ये जलाल ज़रा,
पता चले किसके घर हलवा,
किस घर हैं चाट पकौड़ी।

मैं भी देखूँ अम्बर से ये,
पेड़ कहाँ पर फलदार खड़े,
कहाँ खेलते छोटे बच्चे,
कहाँ जमा हैं अब लोग बड़े,
पंख अगर जो मिलते ऐसे,
कौन बनाता ये पौड़ी।

पर्यावरण

सूरज बाबा आग उगलते,
पाँव जलाए रेत।
सूख गए सब ताल तलैया,
खाली खाली खेत॥

देती है अब मृग मरीचिका,
झूठा जल आभास।
भटक रहे हैं पशु पक्षी सब,
लेकर अपनी प्यास॥
बहुत हुआ है जल का दोहन,
मानव अब तो चेत॥

पर्यावरण हिफाजत का अब,
नहीं किसी को ध्यान।
आगामी परिणामों से हम,
बने हुए अनजान॥
दूषित हवा ये बतला रही,
ठीक नहीं संकेत॥

ग्लोबल वार्मिंग भी तो अपने,
कर्मों का अंजाम॥
लेकर नाम विकास का दिए,
तरुवर काट तमाम।
लील रहा है हमें प्रदूषण,
जैसे कोई प्रेत।

गणतंत्र हमारा

अमर रहे गणतंत्र हमारा,
बने विश्व सिरमौर.

नहीं किसी का सपना टूटे,
शिक्षा से ना बच्चा छूटे.
स्वच्छ रहे परिवेश हमारा,
करे तरक्की देश हमारा.
अमन चैन से रहें सभी हो,
सहिष्णुता का दौर.

भूख गरीबी का काम न हो,
भ्रष्टाचार का नाम न हो.
नेता हों जनसेवक सच्चे,
करें नहीं जो वादे कच्चे.
बात जनों की सुने ध्यान से,
करे बात पर गौर.

आन बान औ' शान हमारी,
भारत है पहचान हमारी.
अपना फर्ज़ निभाना सीखो,
इस पर जान लुटाना सीखो.
नफरत खातिर यहाँ कहीं भी,
तनिक रहे ना ठौर.

वापस जाओ सर्दी रानी

करो नहीं अब आनाकानी,
वापिस जाओ सर्दी रानी.

धुंध कोहरा शीत लहर लो,
छोड़ो मत कुछ यहाँ निशानी.

चमक चमक कर सूरज कहता,
नहीं चलेगी अब मनमानी.

चलो भगाएं इस सर्दी को,
बच्चे दौड़े कर शैतानी.

बसन्त है आने को आतुर,
रंग लिए कुछ धानी धानी.

काँप रहा है शेर ठंड से,
बंदर को होती हैरानी.

इसे देख कर दाँत बज रहे,
चादर फैली जो बर्फानी.

बूढ़ा बाबा कहे ठिठुरता,
मरती भी ना ये मरजानी.

शोक करें क्या कहो आपका,
दुनिया भी तो आनी जानी.

सोच विचार

आओ बच्चो सभी बैठकर,
करें तनिक ये सोच विचार.
सर्वश्रेष्ठ हों कैसे जग में,
कैसे चहुँदिस हो जयकार.

बुरी आदतें अपनी त्यागें,
विपद देख ना हरगिज भागें.
करने होंगे नेक इरादे,
पूरे करें पुरातन वादे.
परिश्रम करके अपने सपने,
हमको करने हैं साकार.

मन में अपने जो भी ठानें,
उसको पूरा करके मानें.
मेहनत से अब पढ़ना होगा,
साथ समय के बढ़ना होगा.
डटे रहो तुम भी सैनिक से,
परिश्रम का लेकर हथियार.

आदर मान बड़ों का करना,
दुखिया की पीड़ा को हरना.
पहले तोलें फिर कुछ बोलें,
बातों में मिसरी सी घोलें.
खरी बात को मुँह पर कहना,
मन में रखना नहीं विकार.

बीत गया सो बात गई है,
दिन निकला ज्यों रात गई है.
लेकर खुशियों का डेरा अब,
आया है नया सवेरा अब.
सुध आगे की रखना हरदम,
बीती सारी बात बिसार

वन में इण्टरनेट

सारे वन में चहल-पहल थी,
पशुओं में रोमाँच।
किया शेर ने 'कहो' नाम का,
एक पोर्टल लाँच ॥

निर्भय होकर बात लिखे सब,
दर्ज करें ऐतराज।
दूर करेंगे गिला सभी का,
जंगल के महाराज ॥

गीदड़ ने ये लिखी शिकायत,
हम हैं दर-दर भटके।
चमगादड़ ने व्यथा सुनाई,
हम क्यों उल्टे लटके॥

भालू की बस एक शिकायत,
मिलता यहाँ न नाई।
अजगर ने अपना दुख रोया,
काम न मिलता भाई॥

गधा पूछता शेर हमें क्यों,
B दावत पर न बुलाते।
शहर कभी जाकर देखो
गधे पंजीरी खाते।

साईट बंद मिली अगले दिन,
जब बंदर ने चैक किया।
पता चला ये सारा सिस्टम,
उल्लू ने था हैक किया।

पेड़ अगर जो

पेड़ अगर जो चलते-फिरते,
अजब नजारा होता।

आज यहाँ, कल चले वहाँ पर,
खोजे कोई कहाँ-कहाँ पर,
वहीं खड़े ये मिल जाते सब,
मिलता पानी इन्हें जहाँ पर,
इनका एक ठिकाना फिर तो,
नदी किनारा होता।

नीम आम को यूँ समझाता,
जगह छोड़ काहे को जाता,
दौड़ लगते सारे सरपट,
लिए कुल्हाड़ी कोई आता,
जाना ना परदेस पेड़ तुम,
सबका नारा होता।

कभी रूठते, कभी मानते,
गाँव-शहर की खाक छानते,
पता पूछते लोग इन्हीं से,
हर रस्ता ये खूब जानते,
पानी पीकर घाट-घाट का
मन बंजारा होता।

खाना खूब दवाई

आज सवेरे दादा जी ने,
प्यारी कथा सुनाई।

एक गाँव के भव्य भोज में,
मोटू राम पधारे,
काजूकतली, लड्डू खाए,
ले-ले कर चटकारे,
बड़े शौक से खड़े-खड़े फिर,
ढेर जलेबी खाई।

गर्मागरम देख कर चीजें,
तबीयत हुई हरी थी,
पेट भरा मोटू का लेकिन,
नीयत नहीं भरी थी,
बुझे-बुझे से चले वहाँ से,
आगे ठोकर खाई।

घर आते ही हुआ दर्द वह,
पकड़ पेट चिल्लाया,
डॉक्टर जी ने पूछा उनसे,
बोलो क्या कुछ खाया,
बरफी, लड्डू, सब्जी-पूरी,
पी गया रस मलाई।

डॉक्टर बोला मरा-मरा का,
छोड़ राग ये जपना,
माल पराया था लेकिन, था,
पेट तुम्हारा अपना,
सूई एक लगेगी भईया,
खाना खूब दवाई।

बन्दर चला बाजार

एक रोज की बात बताएँ, बन्दर जब बाजार चला।
साथ सभी थे बीवी बच्चे, लेकर दाम हजार चला।।

कपिराज संग बीच बजरिया,
झगड़ पड़ी उसकी बीवी।
बिना फोन के कौन जानवर,
कौन गुफा है बिन टीवी।

गुस्सा होकर बेटा बोला मेरा।
ये देख लो बाप मेरा।
कंप्यूटर भी नहीं दिलाता,
खोया है लैपटॉप मेरा।

एक शेर ने पास माँद के,
खोला था शोरूम बड़ा।
अजगर करता फिरे चाकरी,
गीदड़ बन दरबान खड़ा।

साँप, नेवला और लोमड़ी,
ऑर्डर सभी लिखा रहे।
हाथी और जिराफ वहाँ पर,
माल सभी को दिखा रहे।

कीमत देखी जब बंदर ने,
अपने मन को मार चला।
महँगाई को रहा कोसता,
वापिस ले परिवार चला।

सर्दी आई, सर्दी आई

पहने भारी एक लबादा,
चले सैर को देखो दादा,
जाड़े को भी दुश्मन समझो,
हमसे हरदम कहते दादा,
कितनी अच्छी लगे रजाई,
सर्दी आई, सर्दी आई।

आग जला कर बोला नरसी,
सूरज को हैं आँखें तरसी,
मैदानों में देखो पाला,
लगता अंबर से हिम बरसी,
धुंध में देता नहीं दिखाई,
सर्दी आई, सर्दी आई।

भालू अलाव ताप रहा है,
बंदर सबको भाँप रहा है,
जंगल के राजा को देखो,
कैसे थरथर काँप रहा है,
गीदड़ पर भी जर्दी छाई,
सर्दी आई, सर्दी आई।

सर्दी जाती, गर्मी आती,
बरखा सबके मन को भाती,
मौसम बदले तभी जगत में,
रवि का फेरा धरा लगाती,
बात समझ में अब ये आई,
कैसे है ये सर्दी आई।

नववर्ष का उन्माद

नए वर्ष की सुबह शेर ने,
किया सोमरस पान।
जारी किए माँद से उसने,
बड़े अजीब फरमान।।

गिरगिट वन में रहना चाहे,
छोड़े रंग बदलना,
बिल्ली ने जो रस्ता काटा,
हाथ पड़ेगा मलना,
कैसा भी हो वक्त मगर तुम,
गधा न बाप बनाना।
भेड़चाल का अब तो वन में,
फैशन हुआ पुराना।

बंदर अब घुड़की को तज दे,
गीदड़ छोड़े भबकी,
अजगर अब आलस को तज कर,
करे चाकरी सबकी,
आँसू कहीं न दिखें मगर के,
बगुला छोड़े ध्यान,
अपनी पूँछ रखेंगे सीधी,
जंगल के सभी श्वान।

जिसने भी की हुक्म -उदूली,
मुश्किल है बच पाना,
मानों मुझको इस जंगल में,
शैतानों का नाना,
चारों तरफ हुए जब दंगे,
वन में जगा आवेश,
उतरा नशा शेर का ,उसने,
निरस्त किए आदेश।